नरेन्द्र वर्मा

नरेन्द्र वर्मा वस्तुत: छत्तीसगढ़ी भाषा-अस्मिता की पहचान बनाने वाले गम्भीर कवि थे। हिन्दी साहित्य के गहन अध्येता होने के साथ ही 'कुशल वक्ता, गम्भीर प्राध्यापक, भाषाविद् तथा संगीत मर्मज्ञ गायक भी थे।

नरेन्द्र शर्मा

पण्डित नरेन्द्र शर्मा हिन्दी के लेखक, कवि तथा गीतकार थे। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के खुर्जा जिले के जहाँगीरपुर नामक गाँव में हुआ था।

प्रमुख रचनाएँ : प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, कामिनी, हंसमाला, रक्त चन्दन, कदलीवन, द्रौपदी, उत्तरजय।

रामेश्वर शुक्ल अंचल

रामेश्वर शुक्ल अंचल का जन्म किशनपुर (फतेहपुर) उत्तर प्रदेश में हुआ था। रामेश्वर जी छायावाद युग के उत्तरार्ध के कवि हैं। बाद में इन्होंने मार्क्सवादी तथा प्रगतिशील कविताएँ भी लिखी। इनकी भाषा में नए विशेषण और नए उपमान प्रयुक्त हुए हैं।

काव्य रचनाएँ

मधुलिका (1938), अपराजिता (1939), किरणबेला (1941) करील (1942), लाल चूनर (1944), वर्षान्त के बादल, विराम चिह्न (1957)

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को हिन्दी काव्य साहित्य में 'मांसलवाद' का प्रवर्तक माना जाता हैं।

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' का जन्म बिहार के आरा जिले में हुआ।

प्रमुख गीत संग्रह : शुभ्रा, श्वेत, नील, कलापिनी, कम्पन, ऋम्भरा तथा बैठो मेरे पास।

श्यामनारायण पाण्डेय

श्याम नारायण पाण्डेय वीर रस के कवि थे। वह केवल कवि ही नहीं अपितु अपनी ओजस्वी वाणी में वीर रस काव्य के अनन्यतम प्रस्तोता भी थे।

श्यामनारायण पाण्डेय जी ने चार उत्कृष्ट महाकाव्य रचे, जिनमें हल्दीघाटी (काव्य) सर्वाधिक लोकप्रिय और जौहर (काव्य) विशेष च र्चित हुआ।

प्रमुख काव्य रचनाएँ

हल्दीघाटी, जौहर, तुमुल, रुपान्तर, आरती, जय-पराजय गोरा-वध, जय हनुमान, शिवाजी (महाकाव्य)।

हल्दीघाटी में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के जीवन और जौहर में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के आख्यान हैं।

सोहन लाल द्विवेदी

ऊर्जा और चेतना से भरपुर कवि सोहन लाल द्विवेदी को राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत किया गया।

प्रमुख काव्य रचनाएँ

भैरवी, पूजागीत, सेवाग्राम, प्रभाती, युगाधर, कुणाल चेतना, बाँसुरी, तथा बच्चों के लिए दूध बतासा।

रांगेय राघव

रांगेय राघव हिन्दी के उन विशिष्ट और बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनाकारों में से है जो बहुत ही कम उम्र को लेकर इस संसार में आए, लेकिन जिन्होंने अल्पायु में ही एक साथ उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार आलोचक, नाटककार, कवि, इतिहासकार तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर दिया, साथ ही अपने रचनात्मक कौशल से हिन्दी की महान सुजनशीलता के दर्शन करा दिए।

वर्ष 1936-37 के आस-पास जब वह साहित्य की ओर उन्मुख हुए, तो उन्होंने सबसे पहले कविता के क्षेत्र में कदम रखा। इनका साहित्य सृजन भले ही कविता से शुरू हुआ हो, लेकिन उन्हें प्रतिष्ठा मिली एक गद्य लेखक के रूप में।

प्रमुख काव्य रचनाएँ: अजेय खंडहर, मेधावी, पांचाली, राह का दीपक, पिघलते पत्थर।

हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन हिन्दी भाषा के एक कवि और लेखक थे। बच्चन हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों मे से एक हैं। बच्चन जी का जन्म इलाहाबाद में हुआ था।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

तेरा घर (1929), मधुशाला (1935), मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), आत्म परिचय (1937), निशा निमन्त्रण (1938), एकान्त संगीत (1939), आकुल अन्तर (1943), सतरंगिनी (1945), हलाहल (1946), बंगाल का काल (1946), खादी के फूल (1948) सूत की माला (1948),

मिलन यामिनी (1950), प्रणंय पत्रिका (1955), घाट के इधर-उधर (1957) आरती और अंगारे (1958), बुद्ध और नाचघर (1958), त्रिभंगिमा (1961), चार खेमे चौंसठ खूँटे (1962), दो. चट्टानें (1965), बहुत दिन बीते (1967), कटती प्रतिमाओं की आवाज (1968), उभरते प्रतिमानों के रूप (1969), जल समेहा (1973), नई से नई-पुरानी से पुरानी (1985)।

हरिवंश राय बच्चन को उमर खैयाम का जीवन दर्शन बहुत पसन्द आया। खैयाम की रुबाइयों से प्रेरित होकर बच्चन ने मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश की रचना की और हिन्दी में एक नवीन 'वाद' का प्रचार किया,

जो 'हालावाद' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हरिवंशराय बच्चन को 'क्षयी रोमांस का कवि' कहा गया है।

जानकी वल्लभ शास्त्री

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री हिन्दी व संस्कृत के कवि, लेखक एवं आलोचक थे। वे छायावादोत्तर काल के सुविख्यात कवि थे। इनका काव्य-संसार बहुत ही विविध और व्यापक है।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

बाललता, अंकुर, उन्मेष, रूप-अरुप, तीर तरंग, शिप्रा, अवन्तिका, मेघगीत, गाथा, प्यासी-पृथ्वी, संगम, उत्पलदल, चन्दन वन, शिशिर किरण, हंस किंकिणी, सुरसरी, गीत, वितान, धूपतरी, बन्दी मन्दिरम्।

महाकाव्य - राधा।

संगीतिका - पाषाणी, तमसा, इरावती।

शिवमंगल सिंह सुमन

शिवमंगल सिंह 'सुमन' एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि और शिक्षाविद् थे। शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के झगरपुर में हुआ था।

काव्य रचनाएँ

हिल्लोल (1939), जीवन के गान (1942), युग का मोल (1945), प्रलय सृजन (1950), विश्वास बढ़ता ही गया (1948), विंध्य हिमालय (1960), मिट्टी की बारात (1972), वाणी की व्यथा (1980), कटे अंगूठे की वन्दनवारे (1991)।

शम्भुनाथ सिंह

शम्भुनाम सिंह का जन्म गाँव रावतपार, जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वे नवगीत के एक प्रमुख प्रणेता माने जाते हैं।

नवगीत के एक प्रमुख प्रणेता और प्रगतिशील कवि शम्भुनाथ सिंह का हिन्दी कविता में विशेष स्थान है। उनकी कविताएँ नई बौद्धिक चेतना से सम्पृक्त हैं। मानव जीवन की आधुनिक विसंगतियों का प्रभावशाली चित्र अंकित करने में वे अद्वितीय हैं।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

रूप रश्मि (1941), माता भूमि: छायालोक (1945), उदयाचल (1946), मनवन्तर (1948), समय की शिला पर (1968), दिवालोक, जहाँ दर्द नीला है (1977), वक्त की मिनार पर (1986)।

गोपाल सिंह नेपाली

गोपाल सिंह नेपाली हिन्दी एवं नेपाली के प्रसिद्ध कवि थे। गोपाल सिंह नेपाली का जन्म बिहार के पश्चिमी चम्पारण के बेतिया में हुआ था। उत्तर छायावाद के जिन कवियों ने कविता और गीत को जनता को कंठहार बनाया, गोपाल सिंह 'नेपाली' उनमें अहम थे।

प्रमुख रचनाएँ

उमंग (1933), पंछी (1934), रागिनी (1935), पंचमी (1942), नवीन (1944), नीलिमा (1945), हिमालय ने पुकारा (1963)।

विविध

छायावादी चतुष्टय कवि (मुख्य धारा के चार कवि) निम्नलिखित दर्शनों से प्रभावित थे-

जयशंकर प्रसाद	-	शैव दर्शन
महादेवी वर्मा	-	बौद्ध दर्शन
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	-	अद्वैत वेदान्त
सुमित्रानन्दन पन्त	-	अरविन्द दर्शन

- ❖ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को छायावाद का शलाका पुरुष भी कहा जाता है।
- ❖ पण्डित निराला ने प्रगतिवादी चेतना से अनुप्राणित रचनाएँ भी लिखी जो निम्न हैं-कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, मास्को डायलाग्स, नये पत्ते, खजोहरा, रानी और कानी।

छायावाद : ब्रजभाषा काव्य

छायावादी युग में कुछ ब्रजभाषा में भी काव्य रचनाएँ हैं जिनका विवरण इस प्रकार हैं।

कवि	रचनाएँ
रामनाथ ज्योतिषी	राम चन्द्रोदय काव्य (1936)
रामचन्द्र शुक्ल	बुद्धचरित (1922)
रायकृष्ण दास	ब्रजरज (1936)-
वियोगी हरि	वीर सतसई (1927), चरखा
किशोरी दास वाजपेयी	तरंगिणी (1936)
रामेश्वर करूण	करूण सतसई

प्रगतिवाद (1936-42)

मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्य में प्रगतिवाद के रूप में उदय हुआ। यह समाज को शोषक और शोषित के रूप में देखता है। प्रगतिवादी शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना की कोशिशों का समर्थन करता हैं। यह पूँजीवाद, सामन्तवाद, धार्मिक संस्थाओं को शोषक के रूप में चिह्नित कर उन्हें उखाड़ फेंकने की बात करता हैं।

प्रगतिवाद एक राजनैतिक एवं सामाजिक शब्द है। यह उन विचार धाराओं एवं आन्दोलनों के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाता है, जो आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों में परिवर्तन या सुधार के पक्षधर है।

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद का समय वर्ष 1936 से 1942-43 तक माना जा सकता है। इसी वर्ष लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ का पहला सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता प्रेमचन्द ने की। इसके बाद साहित्य की विभिन्न विधाओं में मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रचनाएँ हुई।

वर्ष 1936 का वर्ष हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वर्ष है। इस समय छायावाद जहाँ एक ओर अपने पूर्ण उत्कर्ष पर दिखाई पड़ता है, वहाँ साथ-साथ उसमें ह्रास भी दिखाई देता है। व्यक्तिवाद की जो व्यापक चेतना, लोक संग्रह, आशा और उल्लास का जो स्वर प्रसाद, महादेवी, निराला और पन्त में मिलता है, नए कवियों में उसका प्रायः लोप सा हो गया है। उत्तर छायावाद में अनेक कवि प्रगतिवाद के जीवन आदर्श से प्रेरित हुए हैं।

प्रगतिवादी काव्य धारा की प्रमुख विशेषताएँ : प्रगतिवादी काव्य धारा की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं-

रूढ़ि-विरोध

प्रगतिवादी साहित्यकार ईश्वर को सृष्टि का कर्ता न मानकर प्रगतिवादी द्वन्द्व को सृष्टि के विकास का कारण स्वीकार करता है। उसे ईश्वर की सत्ता, आत्मा, परलोक, भाग्यवाद, धर्म, स्वर्ग, नरक आदि पर विश्वास नहीं है।

क्रान्ति का स्वर

प्रगतिवादी कवि पूँजीवादी व्यवस्था रूढ़ियों तथा शोषण के साम्राज्य को समूल नष्ट करने के लिए विद्रोह का स्वर निकालते हैं।

मानववाद का स्वर

प्रगतिवादी कवि कविताओं के माध्यम से मानवतावादी स्वर बिखेरता है। वह जाति-पाति, वर्गभेद, अर्थ भेद से मानव को मुक्त करके एक मंच पर देखना चाहते हैं।

नारी भावना

प्रगतिवादी कवियों का विश्वास है कि मजदूर और किसान की तरह साम्राज्य वादी समाज में नारी भी शोषित है।

कला पक्ष

प्रगतिवाद जन आन्दोलन के रूप में उभरा था, इसीलिए इन कवियों ने अपनी भाषा को बहुत सरल और जन-भाषा के नजदीक रखा।

सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण

प्रगतिवादी कविता की मुख्य विशेषता शब्दों के माध्यम से ध्वनि देना और अपनी जमीन से जुड़कर यथार्थ का चित्रण करना हैं।

समसामयिक राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीय चित्रण

प्रगतिवादी कवियों ने देश-विदेश में उत्पन्न समसामयिक समस्याओं और घटनाओं को अनदेखा नहीं किया।

प्रमुख प्रगतिवादी कवि

प्रगतिवादी कवियों का विस्तृत विवरण इस प्रकार हैं-

नागार्जुन (1911-1998)

नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। नागार्जुन का जन्म मधुबनी जिले के सतलखा में हुआ था।

नागार्जुन का असली नाम वैद्यानाथ मिश्र था परन्तु हिन्दी साहिय में उन्होंने नागार्जुन तथा मैथिली में यात्री उपनाम से रचनाएँ की।

नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य-परम्परा ही जीवन्त रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। उनका कवि व्यक्तित्व कालिदास और

विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना-संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है। उनका 'यात्रीपन' भारतीय मानस एवं विषय वस्तु को समग्र और सच्चे रूप में समझने का साधन रहा है।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

युगधारा (1953), सतरंगे पंखों वाली (1959), प्यासी पथराई आँखे (1962), तालाब की मछलियाँ (1974), तुमने कहा था (1980), खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1980), हजार हजार बाँहो वाली (1981), पुरानी जूतियों का कोरस (1983), रत्नगर्भ (1984) ऐसे भी हम क्या!

ऐसे भी हम क्या! ऐसे भी तुम क्या (1985)

आखिर ऐसा क्या कह दिया था मैने (1986)

इस गुब्बारे की छाया में (1990)

भूल जाओं पुराने सपने (1994), अपने खेत (1997)

प्रबन्ध काव्य

1. भस्मांकुर (1970)
2. भूमिजा

प्रसिद्ध कविताएँ

1. बादल को घिरते देखा है।
2. पाषाणी
3. सिन्दूर तिलकत भाल
4. तुम्हारी दन्तुरित मुस्कान
5. पाँच पूत भारत माता के
6. कालिदास
7. हरिजन गाथा
8. अकाल और उसके बाद

रचनाओं से सम्बन्धित तथ्य

- 'युगधारा' नागार्जुन का प्रारम्भिक काव्य संकलन हैं।
- भारत में ब्रिटेन की महारानी के आगमन पर स्वागत की धूमधाम देखकर नागार्जुन ने कहा था "आओ रानी हम ढोयेंगे पालकी, यही हुई है राय जवाहर लाल की"
- 'सिन्दूर तिलकत भाल' नागार्जुन की श्रेष्ठ प्रणयपरक रचना है।
- भस्मांकुर कविता में नागार्जुन ने काम को जिजीविषा के उत्स और सृष्टि के मूल के रूप में व्यक्त किया है। इस कविता में नागार्जुन ने शिव और पार्वती के सम्बन्धों को सहज मानवीय सामाजिक दृष्टि से देखा हैं।

• 'भस्मांकुर' श्रृंगार की पीठिका पर करुण रस को व्यंजित करने वाली रचना है। इसमें बरवै छन्द का प्रयोग हुआ है।

• नागार्जुन ने मैथिली भाषा में 'पत्रहीन नग्न गाछ' शीर्षक से काव्य लिखा। इसमें 52 कविताएँ संकलित हैं।

• नागार्जुन ने अपनी कविता 'प्रतिहिंसा का स्थाई भाव है' के सन्दर्भ में लिखा है;

नागार्जुन को प्रगतिवाद का शलाका पुरुष कहा जाता है।

"यह तो नागार्जुन साहित्य का 'मेनिफेस्टो है।"

डॉ. बच्चन सिंह ने नागार्जुन की कविताओं को "नुक्कड़ कविता' की संज्ञा दी है।